1. भारतीय दर्शन की भूमिका

- दर्शन शब्द 'दृश्' धातु से 'ल्युट्' प्रत्यय करने से निष्पन्न होता है। दर्शन शब्द का अर्थ है- 'जिसके द्वारा किसी वस्तु को देखा या समझा जाय।'
- भारतीय दर्शन की दो शाखाएँ हैं - आस्तिक तथा नास्तिक। जो दर्शन वेदों को प्रमाण रूप में स्वीकार करते हैं, उन्हें **आस्तिक** दर्शन कहते हैं, जिनमें सांख्य-योग, न्याय -वैशेषिक, पूर्वमीमांसा एवं उत्तरमीमांसा (वेदान्त) की गणना होती है।
- जो दर्शन वेदों को प्रमाण रूप में स्वीकार नहीं करते हैं उन्हें **'नास्तिक दर्शन'** कहते हैं, जिनमें चार्वाक, बौद्ध, जैन प्रमुख रूप से हैं।
- सांख्य- योग, न्याय- वैशेषिक, पूर्वमीमांसा- उत्तरमीमांसा इन्हें 'षड्दर्शन' भी कहते हैं।

भरतीयदर्शन

आस्तिकदर्शन	नास्तिकदर्शन
(सांख्य ,योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त)	(चार्वाक,बौद्ध,जैन)

दर्शन	-	**प्रवर्तक आचार्य**
सांख्य	-	कपिल
योग	-	पतञ्जलि
न्याय	-	गौतम
वैशेषिक	-	कणाद
पूर्वमीमांसा	-	जैमिनि
उत्तरमीमांसा (वेदान्त)	-	बादरायण
चार्वाक	-	बृहस्पति/चार्वाक
बौद्ध	-	महात्मा गौतम बुद्ध
जैन	-	ऋषभदेव/महावीर स्वामी

- नास्तिकदर्शन को वेद विरोधी दर्शन भी कहा जाता है -**'नास्तिको वेदनिन्दकः'**
- चार्वाकदर्शन भौतिकवादी दर्शन है, जिसे **लोकायत** नाम से भी जाना जाता है।
- सांख्य एवं योग एक दूसरे के पूरक दर्शन हैं। सांख्य ईश्वर की सत्ता नहीं मानता जबकि योग ईश्वर की सत्ता मानता है। इसीलिए सांख्य को **'निरीश्वर सांख्य'** तथा योग को **'सेश्वर सांख्य'** भी कहते हैं।

दर्शन	ग्रन्थ	अध्याय	सूत्र	प्रमाण	पदार्थ (तत्त्व)	प्रमुख सिद्धान्त/वाद
सांख्य	सांख्यसूत्र	6	537	तीन प्रमाण	25	सत्कार्यवाद परिणामवाद
योग	योगसूत्र	4पाद	195	तीन प्रमाण	26	सत्कार्यवाद सेश्वरवाद
न्याय	न्यायसूत्र	5	60-70	चार प्रमाण	16	असत्कार्यवाद पिठरपाकवाद
वैशेषिक	वैशेषिकसूत्र	10	370	दो प्रमाण	7	परमाणुवाद पीलुपाकवाद
पूर्वमीमांसा	मीमांसासूत्र	12	2644	6 प्रमाण		अपूर्ववाद
उत्तरमीमांसा (वेदान्त)	ब्रह्मसूत्र	4	555	6 प्रमाण	2	विवर्तवाद मायावाद

- बौद्धदर्शन के चार सम्प्रदायों का उल्लेख प्राप्त होता है वैभाषिक,सौत्रान्तिक, विज्ञानवादी, शून्यवादी।
- नागार्जुन बौद्धदर्शन के प्राचीन आचार्य हैं।
- जैनदर्शन के प्राचीन आचार्य - उमास्वाति हैं।
- अकलंकदेव, विद्यानन्द, प्रभासचन्द्र, हेमचन्द्रसूरि, मल्लिषेण आदि जैनदर्शन के प्रमुख आचार्य हैं
- न्यायदर्शन के प्रवर्तक आचार्य गौतम हैं। न्यायदर्शन को 'तर्कप्रधानदर्शन' भी कहते हैं।
- न्यायदर्शन में आगम प्रमाण के द्वारा ईश्वर की सिद्धि की गई है।
- सर्वदर्शनसंग्रह में वैशेषिक दर्शन को **'औलूक्य दर्शन'** कहा गया है।
- पूर्वमीमांसादर्शन के प्रणेता आचार्य जैमिनि हैं।
- पूर्वमीमांसादर्शन वेद को स्वतन्त्र एवं स्वतः प्रमाण के रूप में स्वीकार करता है।

❑❑